मीडिया स्कैन

REGISTERD NEWSPAPER, RNI No: DELHIN 27128/2007

वर्ष : 16 अंक : 10 नई दिल्ली | मार्च 2026 | सहयोग राशि : दस रुपये | पृष्ठ : 4

प्रेस क्लब में उमर खालिद की 'महिमा-मंडन' पार्टी: अर्बन नक्सलों की क्लास-रूम

❑ कॉमरेड लिबरांडु

अरे वाह! प्रेस क्लब ऑफ इंडिया में क्या कमाल का 'प्रेस-कॉन्फ्रेंस' हुआ। नाम था किताब का विमोचन—'Umar Khalid and His World'। लेकिन असल में यह था अर्बन नक्सलों और आंदोलनजीवियों की ग्रैंड फैमिली रीयूनियन, जहां सबने मिलकर एक आरोपी की 'क्रांतिकारी' जीवनी पढ़ी और तालियां बजाईं जैसे कोई स्कूल का एनुअल फंक्शन हो, जहां टीचर (रोमिला थापर, रामचंद्र गुहा) स्टूडेंट (उमर खालिद) की तारीफ में कविताएं पढ़ रहे हों, और प्रिंसिपल (श्रीनिवासन जैन) मंच से भाषण दे रहे हों कि "क्रोनोलॉजी समझिए, सुबह जेल में डालते हैं, शाम को डेमोक्रेसी की मां बन जाते हैं!"

वाह रे पत्रकारिता! प्रेस क्लब, जो कभी चौथे स्तंभ का गढ़ माना जाता था, आज 'असहमति की आवाज' के नाम पर UAPA के आरोपी की किताब लॉन्च कर रहा है। किताब में क्या-क्या है? रोमिला थापर की 'इतिहास की नजर' से लेकर प्रकाश राज और स्वरा भास्कर के 'इमोशनल मैसेज' तक। जिग्नेश मेवाणी, आनंद तेलतुंबड़े, मुकुल केसवन—पूरी 'लाइब्रेरी ऑफ लिबरल्स' इकट्ठी हो गई। और हां, खुद उमर के जेल से लिखे 'गहन' निबंध भी। जैसे तिहाड़ जेल अब साहित्य अकादमी का एक्सटेंशन हो गया हो!

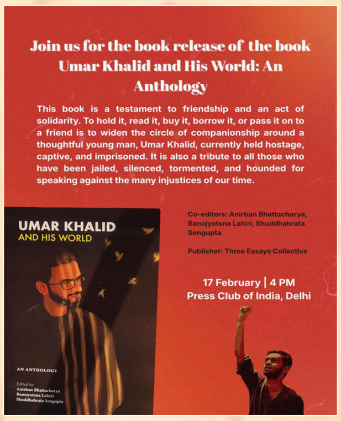

मजेदार बात यह है कि ये वही लोग हैं जो अन्य मामलों में चिल्लाते हैं—"कानून अपना काम करे, अदालत फैसला करे!" लेकिन जब बारी उमर की आती है, तो अचानक अदालत 'फासीवादी' हो जाती है, UAPA 'काला कानून' बन जाता है, और जमानत न मिलना 'मानवाधिकारों का हनन'। दिल्ली दंगों की साजिश के आरोप में सालों से बंद उमर को 'पॉलिटिकल प्रिजनर' का तमगा देकर महिमामंडन कर रहे हैं। भाई, अगर यह 'असहमति' है, तो फिर 'तुकड़े-तुकड़े' वाला नारा भी 'असहमति' ही था न? या वो सिर्फ 'कैंपस रोमांस' था?

आंदोलनजीवियों की यह पूरी क्लास एक साथ बैठी थी—सिद्धार्थ वरदराजन, अपूर्वानंद, परंजय गुहा ठाकुरता, बनोज्योत्सना लाहिड़ी, शुद्धब्रत सेनगुप्ता। सबने मिलकर 'सॉलिडैरिटी' का ढोल पीटा। लेकिन सवाल वही है—क्या राष्ट्र की सुरक्षा, कानून की प्रक्रिया से ज्यादा महत्वपूर्ण इनकी 'वैचारिक निष्ठा' है? प्रेस क्लब में यह कार्यक्रम पत्रकारिता का नहीं, बल्कि 'सिलेक्टिव आउटरेज' का उत्सव था। जहां एक आरोपी को 'शहीद' बनाने की कोशिश हो रही है, जबकि सबूत अदालत में हैं।

अंत में एक सुझाव—अगली बार किताब लॉन्च करनी हो तो प्रेस क्लब की जगह तिहाड़ जेल के बाहर टेंट लगा लें। वहां 'क्रोनोलॉजी' ज्यादा क्लियर दिखेगी। और हां, 'अर्बन नक्सल' क्लास को याद दिला दें—लोकतंत्र में अभिव्यक्ति की आजादी है, लेकिन देशद्रोह की आजादी नहीं। न्याय तथ्यों से होगा, तालियों से नहीं।

प्रो. महेश वर्मा जो ना पत्रकार रहे और ना हो सके प्रवक्ता

प्रो. महेश वर्मा ना बीजेपी की दिल्ली के प्रवक्ताओं की लिस्ट में है और ना राष्ट्रीय प्रवक्ताओं की सूची में है।

मतलब ABP News को फर्जी प्रवक्ता बिठाकर फेक डिबेट ही आयोजित करनी है तो विश्वनीयता का दम क्यों भरना? आ जाओ, उंगलबाजी की कतार में हमारे पीछे खड़े हो जाओ और अपनी विश्वसनीयता के संदिग्ध होने का दावा सार्वजनिक करो।

चैनल पर संदीप का शो पीट रहा है तो क्या चैनल को लगता है कि यू ट्यूब पर ऐसे ही थमनेल के दम पर लोग मदारी का तमाशा देखने आएंगे। संदीप का शो देखिए। उसमें संदीप मदारी होते हैं और अपने शो में महेश वर्मा को बंदर बनाकर नचाते हैं। इसी फॉर्मेट पर उनका शो और उनका फेक नैरेटिव टिका हुआ है।

आइए दिल्ली प्रदेश में बीजेपी के अंदर मीडिया का काम देखने वालों के बीच प्रो महेश वर्मा को तलाशते हैं।

दिल्ली में मीडिया और जनसंपर्क प्रमुख प्रवीण शंकर कपूर हैं। शिखा राय, डॉ. अनिल गुप्ता, प्रवीण बब्बर, विक्रम बिधूड़ी, अजय शेहरावत, डॉ. राजकुमार फुलवारिया, शुभेन्दु शेखर अवस्थी, प्रीती अग्रवाल, नीरज तिवारी, नोमा गुप्ता, ममता त्यागी, यासिर जिलानी और नितिन त्यागी प्रदेश प्रवक्ता हैं।

इसमें ABP News के एंकर संदीप वाले प्रवक्ता दिखाई नहीं दिए।

प्रदेश बीजेपी में मीडिया रिलेशन का काम विक्रम मित्तल देख रहे हैं। आईटी पुनीत अग्रवाल और दिल्ली प्रदेश का सोशल मीडिया डॉ रोहित उपाध्याय के पास है।

इसका मतलब एबीपी न्यूज में बीजेपी प्रवक्ता के नाम पर सालों से फर्जीवाड़ा चल रहा है। जिसे प्रवक्ता बनाकर बिठा रहे हैं, वह प्रवक्ता नहीं है।

ऐसी फेक पत्रकारिता करने वाले संदीपजी को पत्रकारिता पर ज्ञान अपने शो में देते हुए थोड़ी सी शर्म तो आती ही होगी।

जागो दिल्ली सरकार की अकादमी जागो हे!

दिल्ली में हिन्दी अकादमी, पंजाबी अकादमी, उर्दू अकादमी तथा भोजपुरी-मैथिली अकादमी जैसी दिल्ली सरकार की भाषा-साहित्य संस्थाएँ इन दिनों गंभीर अव्यवस्था का शिकार हैं। इन अकादमियों की गवर्निंग बॉडी (संचालन समिति) अब तक पूरी तरह गठित नहीं हो पाई है, जिसमें सामान्यतः 21 सदस्य शामिल होते हैं।

ये सदस्य ही नीति-निर्माण, कार्यक्रम आयोजन और दैनिक कार्यों में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। कांग्रेस शासनकाल में ऐसी संस्थाओं के पदों को भरना प्राथमिकता होती थी, क्योंकि वे भाषा-संस्कृति के संरक्षण का महत्वपूर्ण माध्यम मानी जाती हैं। वर्तमान में गवर्निंग बॉडी के अभाव में निर्णय लेने की प्रक्रिया ठप है।

अकादमियों का प्रशासनिक ढाँचा भी कमजोर है। डिप्टी सेक्रेटरी के पास अतिरिक्त प्रभार है, जबकि उपाध्यक्ष (Vice Chairman) पद भी खाली पड़ा है। ऐसे में दैनिक कार्य, अनुदान वितरण, साहित्यिक कार्यक्रम, प्रकाशन और पुरस्कार योजनाएँ प्रभावित हो रही हैं। कामकाज बेहतर कैसे होगा, जब नेतृत्व और नीति-निर्माण का अभाव हो?

सबसे बड़ा उदाहरण ऐतिहासिक लाल किले का कवि सम्मेलन है, जो हर वर्ष गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित होता था। कोविड काल में भी यह औपचारिक रूप से हुआ, लेकिन इस वर्ष वह परंपरा भी टूट गई और कार्यक्रम नहीं हुआ। यह सांस्कृतिक विरासत की उपेक्षा का प्रतीक है। दिल्ली के कला, संस्कृति एवं भाषा विभाग को तत्काल इन अकादमियों पर ध्यान देना चाहिए। गवर्निंग बॉडी का शीघ्र गठन, नेतृत्व की नियुक्ति और नियमित निगरानी से ही इन संस्थाओं को पुनर्जीवित किया जा सकता है, अन्यथा दिल्ली की बहुभाषी सांस्कृतिक धरोहर कमजोर पड़ती जाएगी।

उंगलबाज.कॉम चेतावनी, इस अंक में प्रकाशित तस्वीरों को गम्भीरता के साथ नहीं बल्कि भांग के साथ लें... होली पर कौन बुरा मानता है बहन...

डिजिटल दरबार के भोंपू: कांग्रेस के लिए नैरेटिव बुनते X के सिपाही

अली हुसैनी ख़ामेनेई की विदाई पर कांग्रेस और इंडि अलायंस का सारा आईटी सेल, इको सिस्टम समेत आंसू बहा रहा है। यह आंसू रुकने का नाम नहीं ले रहा। या हुसैन या हुसैन या हुसैन या हुसैन। एक आमना का लाल है एक फ़ातिमा का लाल नाना भी बे-मिसाल नवासा भी बेमिसाल। या हुसैन या हुसैन या हुसैन या हुसैन।

सोशल मीडिया की दुनिया में कुछ X हैंडल्स ऐसे हैं, जो घंटों-घंटों कांग्रेस और इंडी गठबंधन के लिए डिजिटल ढोल पीटते नजर आते हैं। ये लोग या तो अनौपचारिक आईटी सेल के सिपाही हैं या फिर इनके ट्वीट्स के बदले मोटा माल मिल रहा है—कौन जाने?

लेकिन एक बात साफ है: इनका हर ट्वीट, हर रीट्वीट, हर हैशटैग कांग्रेस और इंडि गठबंधन के तारीफ में कसीदे पढ़ता है, और बीजेपी के लिए इनके पास सिर्फ तंज और तिरस्कार है। नीचे दिए गए हैंडल्स की पड़ताल है, जिसमें इनके एकपक्षीय राग को व्यंग्य की चाशनी में डुबोकर परोसा गया है। तथ्यों से कोई समझौता नहीं, लेकिन भाषा में थोड़ी होली की ठंडई है, ताकि इनके डिजिटल नौटंकी की पोल खुल सके।

@VinodSharmaView: कांग्रेस का डिजिटल दर्पण

@VinodSharmaView खुद को कमेंटेटर कहते हैं, लेकिन इनका X अकाउंट तो कांग्रेस का प्रेस रिलीज डिपार्टमेंट लगता है। राहुल गांधी को 'भावी पीएम' बताते हुए ये बीजेपी की नीतियों को किसानों और युवाओं के खिलाफ बताते हैं।

@nehafolksinger: गीतों की आड़ में प्रचार

नेहा सिंह राठौर, यानी @nehafolksinger, लोकगीतों की आड़ में कांग्रेस का भोंपू बन चुकी हैं। इनके गाने बीजेपी की नीतियों पर तंज कसते हैं- बेरोजगारी, महंगाई जैसे मुद्दों पर चुटकुले गढ़ते हुए। हाल के ट्वीट्स में यूपी की बीजेपी सरकार पर व्यंग्य और राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा की तारीफ साफ दिखती है। बीजेपी के लिए एक अच्छा शब्द? अरे, वो तो इनके शब्दकोश में है ही नहीं! हर ट्वीट में #Berozgari जैसे हैशटैग के साथ कांग्रेस का नैरेटिव चमकता है।

50-100 लाइक्स के साथ इनका दर्शक वर्ग छोटा लेकिन निष्ठावान है। हिमाचल में कांग्रेस की लचर सरकार पर चुप्पी साधकर ये साबित करती हैं कि इनका माइक एकतरफा ही बजता है। पैसे का खेल है या दिल से भक्ति? ट्वीट्स से तो यही लगता है कि ये कांग्रेस की डिजिटल गायिका बन चुकी हैं।

@ZakirAliTyagi: रीट्वीट का रणबांकुरा

सोशल मीडिया कट्टरपंथी इन्फ्लूएंसर @ZakirAliTyagi का X अकाउंट कांग्रेस का डिजिटल ड्रमर है। अली हुसैनी ख़ामेनेई की विदाई पर जाकिर अली त्यागी के आंसू रूक नहीं रहे। दावा है उनका कि वे पत्रकार हैं। उन्होंने भी एक्स पर अपनी तस्वीर गांधी की एक किताब के साथ लगा रखी है लेकिन उनके दिल में गांधी नहीं ख़ामेनेई रहता है।

प्रियंका गांधी और सुप्रिया श्रीनेत के ट्वीट्स को रीट्वीट करते हुए ये "बीजेपी की लूट" और "मोदी की नाकामी" जैसे जुमले उछालते हैं। द वायर जैसे पोर्टल्स की खबरें शेयर कर ये बीजेपी को कोसते हैं, लेकिन बीजेपी की सड़कें, रेलवे या विदेश नीति की तारीफ? वो इनके लिए एलियन भाषा है। सैकड़ों लाइक्स और रीट्वीट्स के साथ इनका असर सीमित लेकिन ठोस है। कांग्रेस की राजस्थान में गुटबाजी पर चुप्पी दिखाती है कि इनका एजेंडा साफ है—कांग्रेस की चमचागिरी। पैसे ले रहे हैं या बस जोश में हैं? बिना सबूत के कुछ नहीं कह सकते, लेकिन दिन में 10 ट्वीट्स की मेहनत IT सेल जैसी ही लगती है।

@Ashok_Kashmir: अकेले चलो का ढोंग

@Ashok_Kashmir का X अकाउंट कांग्रेस के लिए 'एकला चलो रे' का नारा देता है, जैसा कि 7 जनवरी 2025 के ट्वीट में दिखा, जहां ये कांग्रेस को इंडी गठबंधन से अलग मजबूत होने की सलाह देते हैं। बीजेपी की नीतियों, जैसे नोटबंदी, पर तंज कसते हैं, लेकिन दिल्ली में कांग्रेस की संगठनात्मक मेहनत की तारीफ करते नहीं थकते। बीजेपी की क्षेत्रीय जीत? उस पर सन्नाटा! 100-200 लाइक्स के साथ इनका असर सीमित है। पंजाब में कांग्रेस की आपसी लड़ाई पर चुप्पी इनके पक्षपात को उजागर करती है। रणनीतिक ट्वीट्स IT सेल की गंध देते हैं। इनका एकपक्षीय रवैया बीजेपी को शैतान और कांग्रेस को संत दिखाने की कोशिश है।

@dromsudhaa: विद्वता का ढोंग

@ dromsudhaa: ने अपने ट्वीट्स में जयराम रमेश को रीट्वीट कर बीजेपी की नीतियों को 'बुद्धि-विरोधी' ठहराया। NEP 2020 पर एक शब्द नहीं! 50-150 लाइक्स के साथ इनका प्रभाव सीमित है। फिर भी कांग्रेस इको सिस्टम का हिस्सा बने रहने के लिए ऐसी कोई बात भूल कर भी नहीं करते जिससे मुस्लिम नाराज हो जाएं। खामनेई की विदाई भारत के दलितों के जीवन में परिवर्तन के लिए कोई भूमिका नहीं निभाने वाला। यह घटना भारत की नहीं है। भारत के सामने अपनी दर्जनों चुनौतियां हैं लेकिन अपने आकाओं को खुश करना भी इन जैसे टुलकिट के औजारों की मजबूरी होती है। इसलिए दे दनादन इन्होंने खामनेई पर टवीट किए।

कर्नाटक में कांग्रेस की शैक्षिक नाकामी पर चुप्पी इनके पक्षपात को उजागर करती है। पैसे का सबूत नहीं, लेकिन विद्वता की आड़ में कांग्रेस का प्रचार साफ दिखता है। ये शिक्षित वोटरों को लुभाने की कोशिश में हैं, लेकिन एकपक्षीय रवैया इनके मंसूबों को बेनकाब कर देता है।

@aditiyadav_00: युवा योद्धा का प्रचार

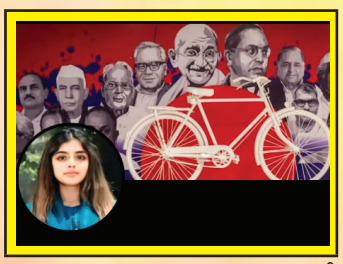

@aditiyadav_00, समाजवादी पार्टी से अपने रिश्ते छुपा नहीं पाती। इस रिश्ते की वजह से, राहुल गांधी के NYAY और भारत जोड़ो यात्रा को आसमान पर चढ़ाती हैं। अग्निपथ जैसी बीजेपी नीतियों को कोसती हैं, लेकिन कांग्रेस शासित राज्यों में बेरोजगारी पर चुप!

हाल के ट्वीट्स में #CongressForYouth जैसे हैशटैग के साथ कांग्रेस के कैंपेन वीडियो शेयर किए। समाजवादी पार्टी और कांग्रेस की लगातार चाटुकारिता की वजह से इनका सारा लिखा पेड कैम्पेन लगता है। इस वजह से धीरे धीरे सोशल मीडिया पर इनका प्रभाव कम हुआ है। बीजेपी की तारीफ? वो इनके लिए सपना है। एकपक्षीय रवैया इनके इरादों को उजागर करता है।

@garvirawat: चुपके से चमचागिरी

@garvirawat का X अकाउंट कम सक्रिय है, लेकिन पूरी तरह कांग्रेस के रंग में रंगा है। हाल के ट्वीट्स में बीजेपी की आर्थिक नीतियों की आलोचना है, लेकिन जीएसटी स्थिरीकरण जैसे बीजेपी के काम पर चुप्पी। 20-50 लाइक्स के साथ प्रभाव कम है। कांग्रेस की आंतरिक समस्याओं पर मौन पक्षपात दिखाता है। चुनिंदा रीट्वीट्स नैरेटिव सेट करने की कोशिश हैं। ये शायद जमीनी समर्थक हैं, लेकिन काम वही IT सेल वाला है।

@Sheetal2242: चतुर चमचागिरी

@Sheetal2242 सूक्ष्म तरीके से कांग्रेस का प्रचार करती हैं। बीजेपी विरोधी खबरें शेयर करती हैं और कांग्रेस की कल्याणकारी वादों की तारीफ। 50-100लाइक्स के साथ प्रभाव सीमित है। हिमाचल में कांग्रेस की नाकामी पर चुप्पी पक्षपात दिखाती है। नैरेटिव सेट करने की कोशिश साफ है।

@PragyaLive: खबरों का नाटक

@PragyaLive न्यूज-स्टाइल में बीजेपी की आलोचना करती हैं, कांग्रेस नेताओं को रीट्वीट करती हैं। हाल के ट्वीट्स में बीजेपी की कथित भ्रष्टाचार की कहानियां, लेकिन कांग्रेस के घोटालों पर चुप्पी। 200-300 लाइक्स के साथ प्रभाव मध्यम है। संतुलित रिपोर्टिंग की कमी पक्षपात दिखाती है। इनकी कथित बिकी हुई रिपोर्टिंग कांग्रेस का डिजिटल न्यूज रूम बन चुकी हैं।

@khanumarfa: संपादकीय का स्वांग

@khanumarfa, द वायर से जुड़ी रहीं। अपने कट्टरपंथी विचारों की वजह से अब अपनी दूकान इन्होंने वायर से अलग कर ली है। अरफा खानम, अल्पसंख्यकों और धर्मनिरपेक्षता पर बीजेपी को कोसती हैं, जो कांग्रेस के नैरेटिव से मेल खाता है।

खामेनेई की मौत पर इन्हें रोते हुए देखकर, Managing Editor, CNN-News18 @Zakka_Jacob ने लिखा : This is a symptom of the problem with left liberals. She's mourning the death of one of the most brutal dictators the world has ever seen. फिर भी इन्हें शर्म नहीं आई और सफाई पर सफाई देती रहीं।

हाल के ट्वीट्स में राहुल गांधी की समावेशिता की तारीफ। हजारों लाइक्स के साथ प्रभाव बड़ा है। कांग्रेस शासित राज्यों में अल्पसंख्यक नीतियों की नाकामी पर चुप्पी पक्षपात दिखाती है। संपादकीय रोल में ये कांग्रेस का प्रचार करती हैं। इनका हर ट्वीट बीजेपी को खलनायक और कांग्रेस को उद्धारक दिखाने की कोशिश है। पत्रकारिता की आड़ में ये डिजिटल प्रचारक बन चुकी हैं।

@mukeshbudharwi: गठबंधन का गुणगान

@mukeshbudharwi इंडी गठबंधन की एकता के लिए प्रचार करते हैं, जैसे 11 दिसंबर 2024 के ट्वीट में ममता बनर्जी को नेतृत्व देने की सलाह। बीजेपी की रणनीतियों की आलोचना, लेकिन कांग्रेस की गठबंधन नाकामियों पर चुप। 100-200 लाइक्स के साथ प्रभाव मध्यम है। बीजेपी

की तारीफ का अभाव और रणनीतिक ट्वीट्स IT सेल की गंध देते हैं।

@apnarajeevnigam: हास्य का हथियार

@apnarajeevnigam, यानी राजीव निगम, हास्य की आड़ में बीजेपी को लताड़ते हैं। हाल के ट्वीट्स में मोदी के भाषणों पर तंज, लेकिन बीजेपी की कल्याण योजनाओं पर चुप्पी। 300-500 लाइक्स के साथ प्रभाव मजबूत है।

कांग्रेस की आर्थिक नाकामियों पर मौन इनके पक्षपात को नंगा करता है। सेलिब्रिटी स्टेटस के साथ ये कांग्रेस का डिजिटल ढोल पीटते हैं। इनका हर ट्वीट बीजेपी को शैतान और कांग्रेस को मसीहा दिखाने की कोशिश है। पैसे का सबूत? नहीं, लेकिन इतना जोश बिना मकसद के तो नहीं आता। इनके हास्य में सिर्फ एक पक्ष की तारीफ और दूसरे की बुराई है—ये है इनका 'निष्पक्ष' हास्य!

@speak000000: भोंपू नंबर एक

@speak000000 का अकाउंट बीजेपी विरोध का तोपखाना है। किसान आंदोलन, महंगाई जैसे मुद्दों पर बीजेपी को कोसते हैं, जो कांग्रेस के कैंपेन थीम से मेल खाता है। कथित तौर पर अम्बेडकरवादी हैं लेकिन इनके लिखने में वह दिखता नहीं है।

हाल के ट्वीट्स में प्रियंका गांधी की तारीफ और बीजेपी की कृषि नीतियों की बुराई। 100-200 लाइक्स के साथ प्रभाव मध्यम है। पंजाब में कांग्रेस की किसान नीति की नाकामी पर चुप्पी पक्षपात दिखाती है। रोजाना की मेहनत IT सेल जैसी है।

@ravish_journo: पत्रकारिता का पाखंड

@ravish_journo, यानी रवीश कुमार, बीजेपी की मीडिया नियंत्रण और नीतियों की आलोचना करते हैं, लेकिन कांग्रेस की अभिव्यक्ति स्वतंत्रता की तारीफ में कसीदे पढ़ते हैं। भाई बिहार कांग्रेस के नेता हैं और खानदानी कांग्रेसी हैं। कांग्रेस बैकग्राउंड की वजह से एनडीटीवी में नौकरी मिलने में भी सुविधा हुई। फिर अपनी वफादारी साबित करके इन्होंने तरक्की हासिल की।

हजारों लाइक्स के साथ प्रभाव बड़ा है। एकपक्षीय नैरेटिव इनके 'निष्पक्ष' पत्रकारिता के दावे को नंगा करता है। कांग्रेस का गुणगान और बीजेपी का तिरस्कार इनके असली रंग दिखाता है। ये पत्रकार कम, कांग्रेस के डिजिटल प्रचारक ज्यादा लगते हैं।

@TheDeshBhakt: देशभक्ति का ढोंग

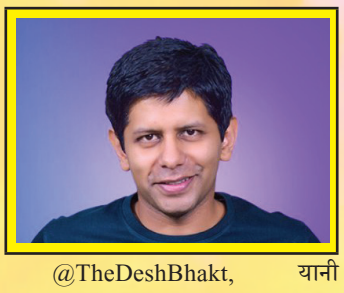

@TheDeshBhakt, यानी आकाश बनर्जी, व्यंग्य के जरिए बीजेपी की राष्ट्रवादिता को निशाना बनाते हैं, जबकि कांग्रेस की समावेशी नीतियों की तारीफ करते हैं। हाल के ट्वीट्स में बीजेपी की आर्थिक दावों की हंसी उड़ाई, लेकिन कांग्रेस की आर्थिक नाकामियों पर चुप। हजारों लाइक्स के साथ प्रभाव बड़ा है। संतुलित टिप्पणी की कमी पक्षपात दिखाती है। पैसे का सबूत नहीं, लेकिन व्यंग्य की आड़ में ये कांग्रेस का डिजिटल ढोल पीटते हैं। इनका "देशभक्ति"वाला ढोंग बीजेपी को खलनायक और कांग्रेस को मसीहा दिखाने तक सीमित है।

ये 15 हैंडल्स कांग्रेस और इंडी गठबंधन के लिए डिजिटल भोंपू बने हुए हैं, जो बीजेपी की हर बात को कोसते हैं और कांग्रेस की हर नाकामी पर पर्दा डालते हैं। इनका रोल जमीनी समर्थक से लेकर सेलिब्रिटी प्रचारक तक फैला है, जो अनौपचारिक IT सेल की तरह काम करता है। पैसे का कोई सबूत नहीं, लेकिन इतनी मेहनत और एकपक्षीय रवैया बिना मकसद के नहीं हो सकता। इनके ट्वीट्स की पड़ताल से साफ है कि ये डिजिटल दरबार में कांग्रेस के लिए नैरेटिव बुन रहे हैं। इनके असली इरादों को उजागर करने के लिए X से परे और सबूत चाहिए, लेकिन इनका रंग तो साफ दिख रहा है-कांग्रेसी चमचागिरी का!

विश्लेषण सिर्फ X के सार्वजनिक ट्वीट्स पर आधारित है।

होली को बदनाम करने वाला 'सुपारी गिरोह'

ब्रज की होली एक पवित्र, भक्ति से भरा उत्सव है, जो श्रीकृष्ण-राधा की प्रेम-लीलाओं से जुड़ा है। यह रंग, संगीत और आनंद का प्रतीक है, न कि अराजकता का।

इस बार सोशल मीडिया पर कुछ वीडियो और पोस्ट वायरल होकर ब्रज होली को बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं, जिसमें असामाजिक तत्वों द्वारा महिलाओं के साथ छेड़छाड़ जैसी घटनाओं को पूरे त्योहार से जोड़ा जा रहा है।

ऐसे कुकर्म करने वाले धर्म का नाम लेकर अपनी गंदी मानसिकता निकालते हैं। यह न तो परंपरा है, न भक्ति।

लेफ्ट-लिबरल या कांग्रेस विचारधारा से जुड़े लोग अक्सर ऐसे मुद्दों को बढ़ा-चढ़ाकर अफवाह फैलाते हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि अपराधी किसी भी धर्म या विचारधारा के हो सकते हैं।

अफवाह फैलाने वाले इकोसिस्टम को साफ तथ्यों से धोएं-ब्रज की होली की गरिमा बचाएं, असुरक्षा फैलाने वालों के खिलाफ आवाज उठाएं, न कि पूरे त्योहार को कलंकित करें।

इस होली में एक सुपारी गैंग सोशल मीडिया पर एक्टिव है। उसे होली को बदनाम करने की सुपारी मिली है। इससे पहले यह काम विज्ञापन के माध्यम से होता था। अब सुपारी के माध्यम से हो रहा है।

सुपारी गिरोह के कुछ सोशल मीडिया अकाउंट से आपका परिचय कराते हैं।

फार्म-4, नियम-8

समाचार पत्र *मीडिया स्कैन* के स्वामित्व संबंधी जानकारी

1.	प्रकाशन स्थान	: एफ-73, गली नं-6, शिवम् लेन, वज़ीराबाद गाँव, दिल्ली-110084
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3.	मुद्रक का नाम	: पवन पांचाल
	राष्ट्रीयता	: भारतीय
	पता	: स्टेलेंट प्रिंट 'एन' पैक, ए-01, डीएसआईडीसी कॉम्पलेक्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली-95
4.	प्रकाशक का नाम	: आशीष कुमार 'अंशु'
	राष्ट्रीयता	: भारतीय
	पता	: एफ-73, गली नं-6, शिवम् लेन, वज़ीराबाद गाँव, दिल्ली-110084
5.	सम्पादक का नाम	: अन्नपूर्णा
	राष्ट्रीयता	: भारतीय
	पता	: एफ-73, गली नं-6, शिवम् लेन, वज़ीराबाद गाँव, दिल्ली-110084

6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों: आशीष कुमार 'अंशु', एफ-73, गली नं-6, शिवम् लेन, वज़ीराबाद गाँव, दिल्ली-110084

मैं आशीष कुमार 'अंशु' एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

हस्ताक्षर

- आशीष कुमार 'अंशु'

प्रकाशक/मुद्रक

मीडिया स्कैन

मीडिया स्कैन पत्रकारिता एवं जनसंचार क्षेत्र में सुधार के लिए कार्यरत लाभरहित संस्था है। साथ ही, यह संस्था मीडिया व संचार के छात्रों के हितों के लिए भी अनवरत प्रयासरत है। पत्रकारिता एवं जनसंचार से जुड़े विषयों पर विमर्श के लिए हम मीडिया स्कैन नाम से मासिक पत्र का भी प्रकाशन करते हैं। इस प्रयास को आपके भी समर्थन की जरूरत है। आप मीडिया स्कैन के निमित्त अर्थ, संसाधन व कंटेंट सभी रूपों में सहयोग कर सकते हैं। आर्थिक सहयोग के लिए कृपया चेक/ड्राफ्ट मीडिया स्कैन के नाम से नीचे दिये गये पते पर भेजें।

मीडिया स्कैन

एफ 73, शिवम् लेन, गली नंबर 6, वजीराबाद गांव, दिल्ली-84

आप सहायता राशि निम्नांकित बैंक खाते में भी सीधे भेज सकते हैं:

नाम	: मीडिया स्कैन
खाता सं.	: 016005006763
बैंक:	: आईसीआईसीआई बैंक
शाखा	: मॉडल टाउन, दिल्ली-110009
आईएफएस कोड	: ICIC0000160

कृपया उपरोक्त के साथ अपने निम्नलिखित विवरण भी उपरोक्त पते पर भेजें:

नाम: .....

पता: .....

ईमेल: .....

फोन नंबर: .....

अपनी राय भेजें

मीडिया स्कैन का नया अंक नये मुद्दे के साथ आपके सामने हाजिर है। आपको यह अंक कैसा लगा यह जरूर बताएं। इस अंक में उठाये गये मुद्दे पर अपनी राय हमें जरूर भेजें।

पता - एफ-73, गली नं. 6, शिवम लेन, वजीराबाद गांव, दिल्ली-110084, चलभाष - +91-9971598416

ईमेल - mediascanresearch@gmail.com

दफनाया क्यों जाता है आतंकवादी?

गाजियाबाद के लोनी में एक्स मुस्लिम सलीम वास्तिक पर जानलेवा हमला हुआ है। वो दिल्ली के जीटीबी अस्पताल में जिंदगी के लिए जंग लड़ रहे हैं।

उनके सवालों से मुसलमान असहज हो जाया करते थे। क्या सवाल पूछने की उन्हें सजा दी गई है?

वे अपने एक वीडियो में पूछते हैं, यदि आतंक का कोई मजहब नहीं होता तो आतंकवादी दफनाया क्यों जाता है? उसकी मौत पर नमाज़-ए-जनाज़ा (Salat al-Janazah) क्यों पढ़ी जाती है?

अब इस तरह के सवालों का जवाब नहीं दे पाए तो जानलेवा हमला ही कर दिया!

राजकमल प्रकाशन और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय वाले वक्ता

एक हैं अतुल तिवारी। वे मंच के हिसाब से वक्ता है। जब वे राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के अतिथि होते हैं तो मोदी सरकार के कला के प्रति समर्पण के लिए कृतज्ञ होते हैं और जब राजकमल प्रकाशन के मंच पर होते हैं तो यह सरकार उनके लिए साम्प्रदायिक ताकतें और डेमोक्रेसी की दुश्मन हो जाती है।

नए-पुराने

राष्ट्रीय विचारधारा के करीब अजीत भारती जैसे नए चेहरों को जोड़ना सराहनीय है। नए लोगों का जुड़ना विचार को व्यापक बनाता है, लेकिन पुराने कार्यकर्ताओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

कुछ सालों से पुराने साथियों का सम्मान, संवाद और जुड़ाव थोड़ा कम हुआ दिखता है। नए-पुराने का संतुलन बनाए रखना आवश्यक है- ताकि विचारधारा मजबूत रहे, कोई छूटे नहीं। समरसता यही है।

साथ काम करने पर बनी सहमति

भारतीय मीडिया के लिए आज का दिन ऐतिहासिक है। उंगलबाज.कॉम और 'मजाक तक' के बीच साथ काम करने पर सहमति बनी।

क्या हुआ 'आशुतोष गुप्ता' तेरा वादा

सोशल मीडिया पर दिल्ली के पत्रकारिता जगत में तीखी बहस छिड़ गई है, जिसमें पत्रकार आशुतोष गुप्ता केंद्र में हैं। आशुतोष ने हाल ही में एक पोस्ट में उन पत्रकारों पर निशाना साधा जो 2014 से पहले अज्ञात थे, लेकिन अब बीजेपी या आरएसएस से जुड़े होने का आरोप लगाते हुए खुद को निष्पक्ष बताते हैं। उन्होंने उन्हें "परजीवी पत्रकार" तक कहा और सत्ता से लाभ लेने का इल्ज़ाम लगाया।

इस पर पत्रकार अनुरंजन झा ने तीखा जवाब दिया। अनुरंजन ने लिखा कि आशुतोष खुद 1995 से पहले किसी को ज्ञात नहीं थे, और उन्होंने कम समय में पुराने पत्रकारों को पीछे छोड़ दिया। उन्होंने कई पत्रकारों के छात्र जीवन में AISA या NSUI से जुड़े होने का जिक्र किया और नीरा राडिया जैसे उदाहरण देकर ब्रीफ लेने

की पुरानी परंपरा याद दिलाई। सबसे बड़ा तीर उन्होंने आशुतोष की उस 'ऐतिहासिक भूल' पर मारा, जब वे आम आदमी पार्टी में शामिल हुए और अरविंद केजरीवाल का समर्थन किया।

राजनीति में जाने के बाद आशुतोष ने 'ऑन द रिकॉर्ड' कसम खाई थी कि पत्रकारिता में नहीं लौटेंगे, लेकिन लौट आए-जिसे वे एक बड़ी गलती मानते थे। अब वह सही कैसे? उन्हें तो कम से कम कोई हक नहीं है कि वे पत्रकारिता पर ज्ञान दें।

उनके करीबी ही बताते हैं कि आशुतोष का पढ़ने-लिखने से अब वैसा ही रिश्ता रह गया है, जैसा सचिन तेंदुलकर का ध्रुपद गायन से। उन्होंने यह भी कहा कि आशुतोष अब व्हाट्सएप फॉरवर्ड्स पर ज्यादा निर्भर लगते हैं।

सुप्रिया श्रीनेतजी ने आशुतोष को समझाइश दी कि यह ज्यादती है। आजकल के पत्रकार पढ़ते हैं। खूब पढ़ते हैं। वाट्सएप के फॉर्वे। लेकिन पत्रकार हर्षवर्धन त्रिपाठी ने इसे 'फ्रेंडली मैच' बताकर दोनों पर चुटकी ली।

इस पूरी जुगलबंदी के बाद आशुतोष सोशल मीडिया पर 'छुट्टा सांड' की तरह बौखलाए नजर आ रहे हैं- जिसे हर्षवर्धन और अनुरंजन ने लाल कपड़ा दिखा दिया हो।

एक के बाद एक पोस्ट, रिप्लाई और बहस में लगे हुए। यूजर्स पूछ रहे हैं कि आखिर इतना गुस्सा क्यों? क्या पुरानी राजनीतिक पसंद-नापसंद का असर है, या पत्रकारिता में वापसी की आलोचना से चोट लगी है?

ब्राम्हण-बनिया गठजोड़

ब्राम्हण-बनिया गठजोड़ का वर्तमान समय में इससे अच्छा कोई दूसरा उदाहरण है क्या...

प्रधान संपादक : वेदांश पांडेय, संपादक : अन्नपूर्णा, संपादक मण्डल : अफ़रोज़ आलम 'साहिल', आशुतोष कुमार सिंह, रविशंकर, कानूनी सलाहकार : निर्मल मिश्रा। लेखकों द्वारा व्यक्त विचार उनके अपने हैं। इससे संपादक और प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सारे पद अवैतनिक और अस्थाई हैं। मीडिया स्कैन से सम्बद्ध किसी भी विवाद का निपटारा दिल्ली न्याय क्षेत्र में होगा। सम्पादकीय कार्यालय : एफ-73, गली नं-6, शिवम् लेन, वज़ीराबाद गाँव, दिल्ली-110084, फोन- +91-9971598416, स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक आशीष कुमार 'अंशु' द्वारा मकान संख्या एफ-73, गली नं-6, शिवम् लेन, वज़ीराबाद गाँव, दिल्ली-84 से प्रकाशित व स्टेलेंट प्रिंट 'एन' पैक, ए-01, डीएसआईडीसी कॉम्पलेक्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली-95 से मुद्रित। RNI No- DELHIN 27128/2007, Postal Licence: DL(N)07/235/09-11